

9. Role of Parents, Family, Teacher and Community in the Well-Being of Adolescents

Dr. Poornima Shrivastava

Assistant Registrar
OPJS University,
Churu, Rajasthan.

Abstract:

किशोरों को किशोर कल्याण मिलना अपने आप में ही एक व्यक्तिगत और सामाजिक अधिकार है साथ ही किशोर अवस्था जीवन कि एक महत्वपूर्ण अवधि होती है, इस अवस्था में अर्जित व ठोस ऐसे कई कारक है जो आजीवन कल्याण में योगदान देते है, और इस में माता पिता परिवार, शिक्षक व समुदाय की भूमिका बहुतमहत्वपूर्ण मानी गई है, क्योंकि किशोर का जीवन इन सब के आस पास ही घूमता है और इनके द्वारा बताये गए प्रतिमान का ही अनुसरण कर के किशोर अपने भविष्य का निर्माता बनता है।

9.1 Adolescent Well Being:

२०१५ में संयुक्त राष्ट्र के सभी राज्यों के सदस्यों ने सतत विकास के लिए एजेंडा २०३० और वर्ग के लोगो के लिए इसके लक्ष्यों के अंतर्गत केंद्र में स्वास्थ्य व कल्याण कि आवश्यकताएं निहित है।

किशोरों के स्वास्थ्य के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ कि वैश्विक रणनीति (२०१६-२०३०) जिसका उद्देश्य हर महिला बच्चो और किशोर के लिए स्वास्थ्य कल्याण सुनिश्चित करना है का मानना है कि किशोर रणनीति कि सम्पूर्ण सफलता के लिए किशोर अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग होंगे। साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.), संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय बाल कोष लेसेंट आयोग किशोरों को एस डी जी के केंद्र में मानता है।

इसके १७ लक्ष्यों पर हस्ताक्षर किये एस डी जी ३ का मुख्य उद्देश्य “**स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और हर उम्र के सभी लोगो के लिए कल्याण को बढ़ावा देना है।**” यह किशोरों के लिए उतना ही हितकारी है जितना कि अन्य किशोरों के स्वास्थ्य और कल्याण कि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने कि आवश्यकता है और इसके लिए विभिन्न संस्थाओं के द्वारा आह्वान भी किया जा रहा है। वर्तमान में कोरोना वायरस (२०१९) नामक रोग ने बहुतायत किशोर स्वास्थ्य कल्याण को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाई है। और इसकी प्रतिक्रियाओं ने किशोरों कि भलाई का समर्थन करने के लिए मौजूदा प्रणालियों के महत्व को और अधिक सुदृढ़ किया है। लेकिन यहाँ प्रश्न उठता है कि किशोर कल्याण क्या है? किशोर कल्याण और किशोर स्वास्थ्य एक दुसरे से कैसे सम्बंधित है?

Role of Parents, Family, Teacher and Community in the Well-Being of Adolescents

इन सवालो के जवाब देने के योगदान के रूप में मातृ नवजात और बाल स्वास्थ्य कि सांझेदारी और W.H.O. संयुक्त राष्ट्र H6+ किशोर स्वास्थ्य कल्याण को परिभाषित करने मापने और प्रोग्रामिंग करने के लिए तकनीकी कार्य समूह किशोर कि भलाई के लिए आम सहमती ढांचा विकसित कर रही है और यह ढांचा किशोर स्वास्थ्य को प्रारंभिक बाल विकास के पोषण और देखभाल के वर्तमान ढांचा को आपस में जोड़ता है। साथ ही यह एक व्यापक कार्यक्रम का भी हिस्सा है जिसके अंतर्गत किशोरों कि भलाई को प्राथमिकता देने के लिए बहु हितधारक कॉल तो एक्शन भी शामिल है और यह २०२२ के “**किशोरों पर वैश्विक शिखर सम्मेलन**” के लिए निर्माण कार्य, और विकास कि समीक्षा करेगा और किशोर समूह के लिए राजनितिक और वित्तीय लक्ष्य बढ़ाने का प्रयास करेगा।

वर्तमान समावेश में किशोर भलाई व स्वास्थ्य कल्याण के कई विवरण विकसित किये गए हैं जिनमें से दो दृष्टिकोण वैचारिक चर्चाओं में अधिक प्रभावी हैं—व्यक्तिपरक निर्माण और उद्देश्य पूर्ण कल्याण और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण।

व्यक्तिपरक निर्माण – व्यक्तिपरक निर्माण व्यक्तिगत अनुभवों और व्यक्तिगत पूर्ति पर जोर देते हैं जिसमें उद्देश्यपूर्ण कल्याण (जैसे जीवन में अर्थ खोजना और व्यक्तिगत विकास की भावना का अनुभव करना) सुखमय कल्याण (खुशी महसूस करना और अपने जीवन से संतुष्ट रहना) साथ ही अन्य जैसे आशावादी होना।

इसके विपरीत **वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण** भौतिक संसाधनों (जैसे आय, भोजन और आवास) और सामाजिक विशेषताओं (शिक्षा स्वास्थ्य राजनितिक सामाजिक संपर्क और जुड़ाव) जैसे संकेत जीवन कि गुणवत्ता के सन्दर्भ में भलाई को परिभाषित करते हैं, इस तरह के उद्देश्यक संकेत किशोर कि क्षमताओं को दर्शाते हैं जिसमें किसी उस के कामकाज और वातावरण से प्राप्त अवसर दोनों ही शामिल होते हैं।

“**रिलेशनल वेलबीइंग**” इस बात पर जोर देती है कि एक किशोर कि भलाई उनके रिश्तों से बहुत अधिक प्रभावित होती है, जिसे व्यक्तिगत, सामाजिक और परिवारणीय संरचनाओं और प्रक्रियाओं के माध्यम से परस्पर गतिशील किर्या के रूप में देखा जाता है।

किशोर कल्याण को मापने के लिए संकेतक इन दो अवधारणाओं को अलग अलग प्रकार से दर्शाते हैं व्यक्तिपरक कल्याण के उपाय संकेतक लागू करते हैं जैसे गैलप वर्ल्ड पोल में इस्तेमाल किये गए व्यक्तिपरक कल्याण उपाय और मनोवैज्ञानिक आवश्यकता संतुष्टि और हताशा के पैमाने, जबकि उद्देश्य कल्याण के उपाय में वैश्विक युवा विकास सूचकांक, सकारात्मक युवा विकास संकेतक या विकासात्मक सम्पत्ति स्कोर जैसे संकेतों का उपयोग करते हैं।

9.2 परिभाषा –

संयुक्त राष्ट्र H6+ तकनीकी कार्य समूह, युवा नेटवर्क और किशोर –सेवारत संगठनों में साहित्य और परामर्श के आधार पर हम किशोर कल्याण संश्लेष और विस्तारित परिभाषा का प्रस्ताव करते हैं। किशोरों कि भलाई

के लिए पांच परस्पर जुड़े हुए डोमिन के भीतर किशोरों की भलाई प्राप्त करने की आवश्यकताओं का भी प्रस्ताव करते हैं। पांच डोमिन व्यक्तिपरक और वस्तुनिष्ठ दोनों को शामिल करते हैं और स्वास्थ्य को पांच डोमेन में से एक के रूप में शामिल करते हैं। डोमिन को लिंग समानता अधिकारों और विचारों से भी परिभाषित किया जाता है। किशोर अवस्था कि पूरी अवधि में भलाई को बढ़ावा देने वाले अवसरों तक पहुंचने के लिए हर किशोर की स्वतंत्रता और क्षमता अलग अलग होती है। जैसे तो यह सभी उम्र के लिए महत्वपूर्ण है परन्तु किशोरों की भलाई के लिए उनकी कम उम्र से ही उन्हें अधिक वयस्क समर्थन और आवश्यकता होती है।

किशोर कल्याण की प्रस्तावित परिभाषा इस प्रकार है –

“किशोर फलते फूलते हैं और अपनी क्षमता अनुसार स्वम लक्ष्य पाने में सक्षम होते हैं। किशोरों के पास सुरक्षित और स्वास्थ्य संबंधों के संदर्भों में फलने फूलने के लिए समर्थन आत्मविश्वास और भरपूर संसाधन होते हैं।”

“किशोर अवस्था जीवन के महत्वपूर्ण चरणों में से एक है, जिसमें तेजी से शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, और सामाजिक विकास शामिल होते हैं यह अवस्था दो अन्य प्रमुख चरणों में निवेश और निर्माण करने का अवसर प्रदान करती है।”

हालांकि अपनी असीमित क्षमता के बावजूद किशोरों को लिंग आधारित भेदभाव हिंसा मानसिक बीमारी और शोषण के बढ़ते जोखिमों का भी सामना करना पड़ता है। शुरुआत के १००० दिन प्रारंभिक अवस्था में सकारात्मक परिवर्तन के तिहरे लाभांश को प्राप्त करने के लिए किशोरों के कल्याण के लिए उनकी स्थिति में सुधार करना, उनके भविष्य के जीवन की संभावनाओं में सुधार करना, और उनकी अगली पीढ़ी के अच्छे परिणामों के लिए कार्य किये जाने का प्रयास किया जाता है। किशोरों के लिए W.H.O. तथा अन्य और संस्थानों के द्वारा किये जा रहे कार्य इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो किशोरों पर केन्द्रित कार्यक्रम करते हैं और इसके प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं।

9.3 किशोरावस्था:

किशोरावस्था को सर्वसमति से बाल्यावस्था और वयस्क अवस्था के बीच के जीवन कि अवधि काल माना गया है किशोरावस्था शब्द लेटिन शब्द के adolescence से लिया गया है जिसका अर्थ है बड़ा होना, आमतौर पर किशोरावस्था यौवन की शुरुआत के साथ शुरू होने वाली अवस्था है। दूसरे शब्दों में तकनीकी रूप से इस अवस्था को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि **“किशोरावस्था वह कार्यकाल है जब किशोर पहली बार प्रजनन करने में सक्षम होने की अवस्था को प्राप्त करता है।”**

आज के समय में किशोरावस्था के प्रारंभिक भाग के दौरान होने वाले सभी शारीरिक परिवर्तनों को संदर्भित करने के लिए यौवन शब्द का उपयोग किया जाता है। इस अवस्था में वसा और मासपेशियों की शारीरिक

Role of Parents, Family, Teacher and Community in the Well-Being of Adolescents

संरचना में बहुत तेजी से परिवर्तन होने प्रारंभ हो जाते हैं साथ ही श्वसन और संचार प्रणाली में भी परिवर्तन देखे जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें अधिक शक्ति और सहनशीलता की आवश्यकता होती है इस समय तंत्रिका और अंताःस्त्रावी तंत्र में भी परिवर्तन होने प्रारंभ हो जाते हैं किशोरावस्था की अवधारणा को समझने के लिए इस संक्रमण कालीन अवधि के दौरान किशोर के मनो सामाजिक अनुभवों के ज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किशोरावस्था समाजीकरण और अन्य ताकतों के कई घटकों से प्रभावित होती है जिनमें से कुछ ऐसे कानून भी हैं जो किशोरों के प्रभाव और नियंत्रण से परे होते हैं। हालाँकि किशोरों को केवल माता पिता, साथियों और शिक्षकों द्वारा परिपक्व युवा के रूप में देखना प्रमित करने वाला होता है।

आमतौर पर पहचान निर्माण को वृद्धि और विकास से सम्बंधित माना जाता है किशोर जितने अधिक सक्षम होते हैं वे उतने ही अधिक बदलाव में रूचि रखते हैं और अपनी स्वयं की छवि का विस्तार करते रहते हैं। किशोरावस्था के दौरान पहचान और शारीरिक विकास अपने चरम पर होता है। शारीरिक परिवर्तनों में भावनात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक, यौन और सामाजिक स्तरों पर परिवर्तन शामिल होते हैं जो किशोर की सुरक्षा की भावना को खतरे में डालते हैं। इस तरह के परिवर्तन और परिवर्तन की प्रक्रिया के दौरान किशोरों को पहचान भ्रम का अनुभव होता है जिसकी बजह से वो आत्मचेतना और तनाव पैदा करते हुए बचपन के वर्षों की छवि में स्थिरता खोने लगते हैं। पहचान निर्माण के इस महत्वपूर्ण चरण के दौरान किशोरों में एरिक्सन के अनुसार विकसित होने की क्षमता होनी चाहिए, जो कि “बच्चों के रूप में वे कौन थे” और वयस्क में उन्हें “क्या बनना है” के बीच कि खाई को पाटने के लिए उनकी एक पहचान सुनिश्चित होनी चाहिए। इस अवस्था में उन्हें अपने माता पिता और शिक्षकों के मार्गदर्शन और समर्थन की विशेष रूप से आवश्यकता होती है, ताकि उन्हें सकारात्मक तरीके से अपनी पहचान “मैं कौन हूँ” का उत्तर देने के लिए आत्मविश्वास से भरा जा सके।

9.4 Role of Parent and Family for Adolescence Well Being:

एक युवा किशोर के माता पिता व परिवार की भूमिका का उल्लेख करते हुए कह सकते हैं कि इस अवस्था में माता पिता व परिवार की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण मानी गई है, क्योंकि यह मानव जीवन की सबसे प्रमित करने वाली अवधि है, इस अवस्था के किशोर के साथ माता पिता व परिवार का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।

माता पिता व परिवार अक्सर अपने किशोर के जीवन में कम ही शामिल हो पाते हैं, क्योंकि वे अपने माध्यम वर्ग के ग्रेड में प्रवेश कर रहे होते हैं लेकिन युवा किशोर को भी उनकी उतनी ही जरूरत होती है जितनी जब वह बाल्यावस्था में थे तब थी, या युवा कहें कि इस अवस्था में ज्यादा, ध्यान, प्यार, और देखभाल की आवश्यकता होती है। माता पिता व परिवार को अपने किशोर के साथ मित्रता के सम्बन्ध के सामान सम्बन्ध स्थापित कर के रखने चाहिए, जैसे जैसे वह बढ़ता है और अपने अनुभव के आधार पर नयी जिज्ञासा पैदा करता है उनको शांत करने की कला माता पिता व परिवार में होनी चाहिए और उसकी जिज्ञासा को शांत

करने के रास्तो पर पहुचने में मददगार बनने की क्षमता विकसित करते रहना चाहिए है क्योंकि माता पिता व परिवार स्वम भी पहले इस अवस्था के चरण को पार कर चुके होते है इस लिये उनके अनुभव अपने किशोर बालक बालिकाओ के लिए बहुत हितकारी सावित होते है, आज का किशोर भविष्य में माता पिता की भूमिका का निर्वहन करने के लिए तैयार हो रहा होता है इसलिये भी सही मार्गदर्शन अत्यंत आवश्यक चरण है।

हालाँकि इन मतभेदों के बीच अनुशंधानो ने बताया है कि किशोर के एक प्रभावी माता पिता के रूप में प्रस्तुत करने के लिए माता पिता में निम्न गुण का होना आवश्यक है –

- **प्यार दिखाना** –जब किशोर कोई गलती करते है तो माता पिता उनपर अपनी नाराजगी प्रदर्शित करते है और उस से किशोर दुखी महसूस करते है , परेशान हो जाते है और कभी कभी विरोध में क्रोध भी दिखाते है ये भावना प्यार ना प्रदर्शित करने से अलग अलग किशोर में अलग अलग रूप से हो सकती है इस समय किशोरों को ऐसे वयस्क कि आवश्यकता होती है जो उनकी संवेदना के साथ जुड़ सके और वे उनसे संवाद कर सके समय बिताये और उनमे अपनी सच्ची रूचि दिखाए इस से किशोरों में भी दुसरो के प्रति देखभाल प्यार सम्मान की भावना विकसित होती है। स्कूल कोउन्सलोर केरोले केअनुसार “माता पिता अपने किशोर से प्यार कर सकते है लेकिन जरूरी नही कि वह प्यार करे।” किशोरों को ये भरोषा करना होगा कि यह सच है।
- **समर्थन प्रदान करना**- संघष करते समय किशोरों को माता पिता क समर्थन कि आवश्यकता होती है ऐसी समस्याओ के साथ जो उनके माता पिता को महत्वहीन लग सकती है और जब उन्होंने अपना भरपूर योगदान दिया है तब उन्हें प्रशंसः की भी आवश्यकता होती है इसके लिए माता पिता के लिए जरूरी है कि वह किशोर कि रूचि और व्यक्तिगत जरूरतको समझे और समय समय पर उन्हें प्रोत्साहित करते रहे।
- **सीमा निर्धारित करना**– माता पिता सदेव अपने किशोर को उनके लिंग के आधार पर सीमा में बांध कर रखने का प्रयास करते है परन्तु कई बार ये निर्धारण अनुचित हो जाता है क्योंकि किशोर हमेशा अपने आस पास के वातावरण, मित्रो परिवार और समाज का अवलोकन कर के अपनी जीवन शैली का चयन करता है तो यदि बिना पूरी जानकारी दिए उनपर बंदिशे लागू कि जाती है तो विरोध और अलगाव कि स्थिति पैदा होती है किशोरों को माता पिता और अन्य किशोरों कि आवश्यकता पड़ती रहती है उनके मार्गदर्शन से ही उन्हें लगातार संरचना और पर्यवेक्षण प्रदान होता है और उम्र के अनुसार मार्गदर्शन, विकास और मर्यादा बनाये रखने का साहस मिलता है जिस से किशोर शारीरिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित रहते है।
- **रोल मॉडल**– माता पिता किशोर के लिए उनके रोल मॉडल होते है माता पिता यदि अपने लिए उचित मानक निर्धारित करते है तो उन्ही का अनुसरण किशोर भी करते है उदाहरण के लिए जैसे-जैसे किशोर

इस बात की संभावनाओं का पता लगाते हैं कि वे कौन हो सकते हैं क्या बन सकते हैं, इसके लिए वे अपने माता-पिता, साथियों, जाने-माने व्यक्तियों को देखते हैं और उनके व्यवहार को स्वयं में देखने का प्रयास करते हैं और ऐसे मौकों की तलाश करते हैं जिस से वह भी उनके जैसे बन सकें।

- **शिक्षण जिम्मेदारी**— बालक जब पैदा होता है तब उन्हें नहीं ज्ञात होता कि उनकी क्या जिम्मेदारी है और उससे किस प्रकार से प्रतिक्रिया करना है यह भावना समय के व उम्र के साथ विकसित होती जाती है और जैसे जैसे वह बालक से किशोर अवस्था में प्रवेश करते हैं उनपर अधिक से अधिक जिम्मेदारी वाहन करने की अपेक्षा की जाती है किशोर कितना जिम्मेदारी का निर्वहन करने में सक्षम है इसका निर्धारण उसकी परिवारिक और शिक्षण पर निर्भर करता है जिसमें माता पिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।
- **अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करना**— किशोरावस्था एक अन्वेषण का समय है इसके कई क्षेत्रों में नए-नए विकास और कार्य चल रहे हैं किशोर जब अपनी बाल्यावस्था में होता है तभी से वह दुसरे के अवलोकन से खुद के अनुभव निर्धारित करने परमभ कर देता है कभी खेलों के माध्यम से, कभी नई अकादमिक खोज और नई किताबें पढ़ कर वह प्रयोग करता रहता है कला के विभिन्न रूपों, विभिन्न संस्कृतियों और करियर के बारे में जानकारी और सामुदायिक या धार्मिक गतिविधियों में भाग लेकर साधनों की उपलब्धता से वह स्वयं ही अपने भविष्य के दरवाजे खोलने का प्रयास करता है इस समय माता पिता उसे नए-नए वस्तुओं का संसाधनों का ज्ञान देकर उनका सहयोग और समर्थन दे सकते हैं जिस से लोगों और नई दुनिया के लिए वह अपनी पहचान स्थापित करने में सफल हो सके। ऐसा करने से, आप अपने आप में नवीकृत हो सकते हैं लंबे समय से उपेक्षित रुचियों और प्रतिभाओं, को भी शामिल कर के जो एक अच्छा उदाहरण भी स्थापित कर सकते हैं आपने किशोर के लिए और जब उनकी रुचियां बदलें तो निराशा न हों और उनका समर्थन करें।
- **सम्मान दिखाना**— सभी युवा किशोरों को उनके आचरण के अनुसार व्यवहार प्रदर्शित करना उनके क्षमता के अनुसार उनसे अपेक्षा करना आकर्षक होता है हर युवा अपने व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण एक दुसरे से भिन्न होते हैं किशोर को एक अलग तरह के उपचार की आवश्यकता होती है उनके सम्मान, जिसके लिए माता पिता को उसके मतभेदों को पहचानने और उनकी सराहना करने की आवश्यकता है और उसे एक व्यक्ति के रूप में व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है साथ ही माता पिता सम्मान के लिए अपने किशोर के दृष्टिकोण से चीजों को देखने की कोशिश करके करुणा और उसकी जरूरतों और भावनाओं पर विचार करके अपने युवा किशोर को आदर के साथ, अच्छे व्यवहार का आनंद लेने में मदद कर सकते हैं।

9.5 Role of Teacher for Adolescence Well Being:

एक स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण के अंदर मनोवैज्ञानिक और शिक्षक समान रूप से बढ़ावा देने के माध्यम से स्कूलों में किशोरों के कल्याण को बढ़ावा दिया जा रहा है स्वस्थ वातावरण, "स्कूल की कक्षाओं में लचीला समुदाय बनें जो संवेदनशील समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान कर सकें ताकि इस से कमजोर किशोर सीखने की क्षमता विकसित कर सफल हो सकते हैं।" समर्थन और मार्गदर्शन जो किशोरों के लिए प्रासंगिक है-

संघ सफलता कक्षा शिक्षक उस डिग्री के रूप में जिसे छात्र महसूस करते हैं और उनके द्वारा सम्मानित, समर्थित और मूल्यवान होते हैं। किन्तु आज सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध खराब हो रहे हैं जिसका प्रभाव किशोरों के भविष्य पर देखने को मिल रहा है।

किशोर कल्याण में शिक्षक छात्र स्वस्थ संबंधों में संदेश देना शामिल है और उच्च स्तर के सामाजिक समर्थन को समझना (अर्थात्, संबंधित अन्य द्वारा आराम और सहायता- जैसे परिवार के सदस्य, दोस्त, और शिक्षकों की)। टार्डी (1985) द्वारा संक्षेप में, सामाजिक समर्थन एक बहुआयामी निर्माण है जिसमें चार अलग-अलग प्रकार के समर्थन सामाजिक रूप से, भावनात्मक, वाद्य, मूल्यांकन और सूचना शामिल हैं। एवं विभिन्न स्थितियों में और जरूरत के अनुसार उपयुक्त रूप से व्यक्त किया जा सकता है। भावनात्मक समर्थन में विश्वास और प्रेम के साथ साथ सहानुभूति और देखभाल के संचार शामिल हैं, उदाहरण के लिए "आप मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं।" वाद्य समर्थन में मूर्त सहायता का प्रावधान शामिल है जैसे कौशल सेवाएँ यहाँ तक कि किसी कि जरूरत पड़ने एक समय पर धन की मदद करना भी इसमें निहित है। मूल्यांकन समर्थन में व्यवहार पर मूल्यांकनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करना शामिल है उदाहरण के लिए स्थिति के एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन के माध्यम से-किसी के प्रदर्शन के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं में एक संकेत के साथ-साथ सुधार के सुझाव-सूचनात्मक समर्थन की विशेषता मार्गदर्शन, सलाह, या सूचना के प्रावधान है जिसके द्वारा-एक समाधान प्रदान कराया जा सकता है।

सामाजिक समर्थन कि सामग्री की जाँच के लिए इस तरह के व्यापक वैचारिक ढाँचे की उपलब्धता के बावजूद युवाओं द्वारा कथित सामाजिक समर्थन पर सबसे मौजूदा शोध ने वैश्विक एकात्मक निर्माण के रूप में समर्थन को मापा है या केवल एक प्रकार के समर्थन का आकलन किया है। (आमतौर पर, भावनात्मक समर्थन), समर्थन का सर्वाधिक संबंध किशोरों से है एक उल्लेखनीय अपवाद में, मालेकी और डेमारे (2003) ने तुलना की। उपरोक्त चारों के अद्वितीय प्रभाव अलग-अलग से माना जाने वाला समर्थन के प्रकार मिडिल स्कूल के छात्रों के सामाजिक, शैक्षणिक व सवैगिक समायोजन के स्रोत पर किस प्रकार कि समझ है उसे बहिष्कृत किया गया है।

सहायक छात्र-शिक्षक संबंध किशोरों की शैक्षणिक व्यस्तता की भी भविष्यवाणी करते हैं और बाद में पढ़ने और गणित कौशल के साथ ही नकारात्मक को कम करते हैं किशोरों के सक्रिय शैक्षणिक परिणाम स्कूल की विफलता के लिए जोखिम भरे लाभकारी शैक्षणिक परिणाम रहे हैं विविधता से युवाओं के अध्ययन में देखा

गया है कि उनकी पृष्ठभूमि में शिक्षक का सहयोग और छात्र की सफलता सामान्य सुझाव है इसके बीच की कड़ी में संस्कृति और जातीयता में भरे रहने, शिक्षण के योग्य से बेहतर शैक्षणिक कामकाज के अलावा, सहायक छात्र-शिक्षक संबंध महत्वपूर्ण होता है। सकारात्मक सहकर्मी संबंधों के साथ साथ आत्मघाती विचारधाराओं में कमी जैसे लाभकारी सामाजिक भावनात्मक out comes को भी जोड़ता है भावनात्मक संकट आवाज मादक द्रवों के सेवन और यौन गतिविधि व्यवहार को अपेक्षित करता है। जिसमें शिक्षक किशोर सम्बन्ध का सकारात्मक रवैया बहुत महत्वपूर्ण है।

9.6 Role of Community for Adolescence Well Being:

माता पिता के लिए किशोरावस्था कठिन हो सकती है और सौभाग्य से इससे अकेले नहीं करना चाहिए जबकि ऐसा लग सकता है कि एक बच्चे को पालने के लिए एक गाँव की आवश्यकता होती है, कई लोग यह भूल जाते हैं कि एक किशोर को पालने के लिए एक समुदाय की भी आवश्यकता होती है। एक किशोर के लिए एक समुदाय का महत्व सर्वोपरि हो सकता है, खासकर जब वे अपनी किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। जबकि एक समुदाय पूरी तरह से आपकी भौगोलिक स्थिति पर आधारित हो सकता है, यह होना जरूरी नहीं है। वास्तव में, "समुदाय" शब्द की दो अलग-अलग परिभाषाएँ हैं। समुदाय को "एक ही स्थान पर रहने वाले या एक विशेष विशेषता वाले लोगों के समूह" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है; "सामान्य दृष्टिकोण, रुचियों और लक्ष्यों को साझा करने के परिणामस्वरूप दूसरों के साथ संगति की भावना।"

जब आप अपने पड़ोसियों, अपने किशोर के स्कूल, अपने शहर या यहां तक कि अपने राज्य के भीतर भी अपने समुदाय में शामिल हो सकते हैं, तो आप और आपके किशोर भी साझा मूल्यों में समुदाय ढूँढ सकते हैं। आपके परिवार को आपके चर्च में, खेल टीम में खेलते समय, या यहां तक कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से समुदाय की एक मजबूत भावना मिल सकती है।

वास्तव में, कई किशोर अपने साथियों के साथ अपना स्वयं का एक समुदाय ढूँढते हैं जो उनकी रुचियों को साझा करते हैं (जैसे वीडियो गेम, मेकअप, कला, या अन्य गतिविधियाँ)। कुल मिलाकर, समुदाय को ऐसे लोगों के समूह की विशेषता होती है जो एक-दूसरे की परवाह करते हैं और महसूस करते हैं कि वे एक साथ हैं।

किशोर अस्वस्थ समुदाय का हिस्सा हो या उसका कोई सामुदायिक सम्बन्ध न हो गुर्णवत्ता पूर्ण सम्बन्ध विकसित करने में समुदाय कि अहम् भूमिका होती है यहाँ कुछ ऐसे तथ्य बताये जा रहे है जो किशोर कल्याण में सहयोगी हो सकते है : किशोर कई बार आपस में खुलकर बात नहीं कर पाते है क्योंकि वे उनके बदलते हारमोनस, बदलते साथियों के समूह और जीवन की बड़ी बड़ी समस्याओं से निपट रहे होते है और कभी कभी आत्मसम्मान के साथ भी समझौता करना पड़ता है दुर्भाग्य से ऐसी परिस्थिति में वो अपने आप को अलग थलग कर सकते है और अपने वयस्क साथियों या रोल मॉडल की सलाह को अनदेखा कर सकते है। माता पिता के रूप में यह आपका काम है कि आप अपने किशोर से बात करे और उन्हें यथा संभव सहज महसूस करने का प्रयास करे चाहे फिर अच्छे ग्रेड के लिए उनकी प्रशंसा करना हो या स्कूल में कुछ हासिल करना हो

ऐसे अलग अलग तरीके खोजे जो उनके आत्म विश्वास को बढ़ाने में सहयोग करे यदि एक माता पिता के रूप में इस व्यवहार को आप स्वम मोडल कर सकते है तो आपका किशोर उदाहरण के द्वारा सीख सकता है । अगर आप को लगता है आप अपने किशोर को किसी भी तरह से सुधार लाने में समर्थ है तो आपको इसके लिए प्रयास करना चाहिए और सुनिश्चित करे कि यह धैर्य और दया के स्थान से आ रहा है जितना अधिक आप अपने किशोर को सकारात्मक व्यवहार और जीवन कौशल विकसित करने के लिए सशक्त बना सकते है उतना ही अधिक आत्मविश्वास होगा जब वे अपने दम पर एक समुदाय का हिस्सा होंगे। एक समूह युवा किशोरों के लिए अपनेपन, आपसी समर्थन, अधिक प्रभाव और अन्वेषण की भावना प्रदान करने में मदद कर सकता है।

9.7 Conclusion:

माता-पिता जानबूझकर किशोरों के लिए अवसर पैदा करते हैं जिस से किशोरों को स्वतंत्र रूप से अभिनय करते हुए दुनिया में विभिन्न भूमिकाओं का अनुभव करने का अवसर मिलता है । माता-पिता और शिक्षकों को चाहिए कि वह किशोरों को आत्म-अनुशासन की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करे आचरण और यथार्थवादी लक्ष्य-निर्धारण में सहायता करे । जहांकि सीमाएं अभी भी निर्धारित की जानी चाहिए, पिछले चरणों के रूप में उन्हें स्थिति के अनुकूल होना चाहिए। शिक्षक किशोरों को सकारात्मक आत्म-छवि विकसित करने में मदद करते हैं और उन्हें बिना शर्त स्वीकार करते है उन्हें हमेशा संदेश देना चाहिए जिन गतिविधियों से वे निपट रहे हैं उसमे सभी किशोरों में रुचि, ध्यान और सहानुभूतिपूर्ण बनाये रखा जाये । इसी तरह, किशोर में आत्मविश्वासी बनने का समर्थन किया जाना चाहिए और जिस से अंततः, स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में वे अपनी पहचान बनाने में तेजी लाते सके ,माता-पिता और अन्य व्यक्तियों के साथ उनके संघर्ष को कम कर और अंततः उन्हें समायोजन करने में मदद करना चाहिए ये माता पिता , परिवार , शिक्षक और सनुदाये कि विशेष जिम्मेदारी है तभीसही रूप से किशोर कल्याण में इनका योगदान सार्थक होगा ।

9.8 References:

1. United Nations Sustainable development goals. New York, United Nations. <https://www.un.org/sustainabledevelopment/sustainable-development-goals>
2. The global strategy for women's, children's and adolescents' health 2016–2030. Every woman every child. 2015. <http://www.everywomaneverychild.org/globalstrategy>
3. Clark H., Coll-Seck A.M., Banerjee A. A future for the world's children? A WHO–UNICEF–Lancet Commission. Lancet. 2020; 395:605–658.
4. WHO, UNICEF, Plan International, International Association for Adolescent Health, Partnership for Maternal, Newborn & Child Health, Child Health Initiative, UN Major Group for Children and

- Youth, UNFPA. 2019. Adolescent health – the missing population in universal health coverage. <https://plan-uk.org/file/plan-adolescent-health-reportpdf/download?token=VVY-cTp>
5. WHO. World Health Organization; Geneva: 2016. Promoting health through the life-course. H6: Harnessing the collective strengths of the UN system to reach every woman, child and adolescent. <https://www.who.int/life-course/partners/h4/en/>
 6. WHO, UNICEF, World Bank Group. World Health Organization; Geneva: 2018. Nurturing care for early childhood development: A framework for helping children survive and thrive to transform health and human potential. <https://apps.who.int/iris/bitstream/handle/10665/272603/9789241514064-eng.pdf>
 7. UN Major Group for Children and Youth, Partnership for Maternal, Newborn & Child Health, WHO, UNFPA, UNICEF, Plan International UK and the Child Health Initiative Make adolescent well-being a priority: An urgent call to action (Version 3.0) www.adolescents2030.org
 8. Partnership for Maternal, Newborn and Child Health PMNCH calls for action on adolescent wellbeing at the ICPD25 Summit, 12 November 2019, Nairobi Kenya. <https://www.who.int/pmnch/media/news/2019/ICPD25-call-for-action/en>
 9. Dodge R., Daly A., Huyton J. The challenge of defining wellbeing. *Internet J Wellbeing*. 2012; 2:222–235.
 10. Martin Maria N., Miret M., Caballero F.F. The impact of subjective well-being on mortality: A meta-analysis of longitudinal studies in the general population. 2017; 79:565–575.
 11. Steptoe A., Deaton A., Stone A.A. Subjective wellbeing, health, and ageing. *Lancet*. 2015; 385:640–648.
 12. Western M., Tomaszewski W. Subjective wellbeing, objective wellbeing and inequality in Australia. *PLoS One*. 2016; 11:e0163345.
 13. Sen A. Human rights and capabilities. *J Hum Dev*. 2005; 6:151–166.
 14. White S. Relational wellbeing: Re-centring the politics of happiness, policy and the self. *Policy Polit*. 2017; 45:121–136.
 15. Diener E., Tay L. Subjective well-being and human welfare around the world as reflected in the Gallup World Poll. *Int J Psychol*. 2015; 50:135–149.

16. Chen B., Vansteenkiste M., Beyers W. Basic psychological need satisfaction, need frustration, and need strength across four cultures. *Motiv Emot.* 2015; 39:216–236.
17. Commonwealth Secretariat. Commonwealth Secretariat; London: 2016. Global Youth Development Index and Report 2016.
18. Hinson L., Kapungu C., Jessee C. YouthPower Learning, Making Cents International; Washington DC: 2016. Measuring positive youth development toolkit: A Guide for implementers of youth programs.
19. Search Institute. Search Institute; Minneapolis, USA: 2016. User guide for the developmental assets profile. <https://www.search-institute.org/wp-content/uploads/2018/01/DAP-User-Guide-1-2016.pdf>
20. Guthold R., Moller A.B., Azzopardi P. The Global Action for Measurement of Adolescent Health (GAMA) initiative—rethinking adolescent metrics. *J Adolescent Health.* 2019; 64:697–699.